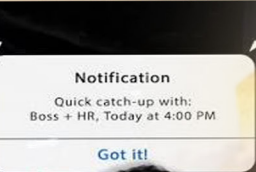


योग तन-मन का संतुलन

हिंदी
विवेक

WE WORK FOR A BETTER WORLD

Issue : - 21 - 27 June 2026



पितांबरी® टूर्स और ट्रैवल्स

दुनिया घूमिए, अपनापन पाइए।



भारत के अद्वितीय स्थलों की सैर!

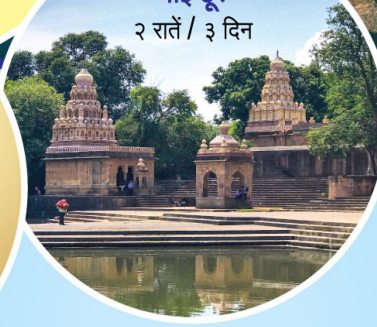
अष्टविनायक दर्शन
२ रातें / ३ दिन



श्री मयूरेश्वर श्री सिद्धिविनायक श्री बल्लाळेश्वर श्री वरदविनायक

श्री चिंतामणी श्री गिरीजात्मज श्री विघ्नेश्वर श्री महागणपती

महाबलेश्वर और
वाई टूर
२ रातें / ३ दिन



स्टैच्यू ऑफ युनिटी और बड़ोदरा
३ रातें / ४ दिन

श्री
समर्थ रामदास
द्वारा स्थापित
११ मारुती
दर्शन



२ रातें / ३ दिन

टूर में शामिल :

- एसी बस / गाड़ी सफर और स्थानीय पर्यटन स्थलों की सैर
- ठहरने के लिए प्रीमियम होटल्स
- स्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था
- जानकार गाइड और सभी प्रवेश टिकट

हमारे अन्य टूर्स

कोस्टल कर्नाटक
(बाय रोड)
६ रातें / ७ दिन

केरल
(बाय फ्लाईट)
४ रातें / ५ दिन

हंपी बदामी
(बाय रोड)
५ रातें / ६ दिन

राजस्थान- मेवाड़ / मारवाड़
(बाय फ्लाईट)
५ रातें / ६ दिन

कश्मीर
६ रातें / ७ दिन

जल्द ही हिमाचल और नैनीताल टूर्स का आयोजन

नेपाल टूर! (बाय फ्लाईट) - ७ रातें / ८ दिन

Attractive
Discount

on Select Tours

Costing more than
₹12000/-

अधिक जानकारी और बुकिंग के लिए संपर्क:

8657968481, 8530015838, 9702963400, 8657307352, 8828913131

अनुक्रमणिका

◆ योग का वैश्विक महत्व	ज्योत्सना जोशी	04
◆ योग: ध्यान व प्राणायाम का समन्वय	अन्विता सिंह	06
◆ वैश्विक प्रसार के अग्रदूत स्वामी रामदेव	बृजेश शुक्ला	08
◆ आश्रम से मोबाइल तक पहुंचा योग	स्निग्धा अवतंस	10
◆ भारतीय नाविकों की मौत से जुड़े कड़े सवाल	प्रमोद जोशी	13
◆ इंडोनेशिया में भूकम्प व उसका प्रभाव	डॉ. नवीन कुमार मिश्र	15
◆ आपातकाल में संघ की भूमिका	प्रो. अरुण कुमार भगत	17
◆ आपातकाल का काला अध्याय	डॉ. राजेश्वर उनियाल	19
◆ फुटबॉल का महाकुम्भ	प्रवीण सिन्हा	21
◆ टी 20 विश्व कप महिला क्रिकेट उत्सव	राजीव रोहित	24
◆ अर्जुन से द्रोणाचार्य तक की यात्रा	अपर्णा झा	26
◆ इधर भी देखें	संकलन	27
◆ समाचार	-	28

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

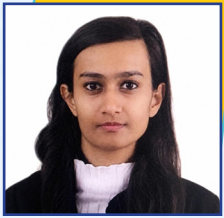
कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2,
श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप,
कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067. सम्पर्क : 9594991884



UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड
स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना
नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।



योग का वैश्विक महत्व



ज्योत्सना जोशी

योग तन और मन दोनों को संतुलित करता है। भारत ही नहीं वैश्विक स्तर पर भी योग के महत्व को स्वीकार किया गया है। आज हर घर व जन-जन तक योग का प्रचार-प्रसार हो रहा है।

योग भारत की प्राचीन आध्यात्मिक विरासत का वह अमूल्य धरोहर है, जिसने आज पूरे विश्व को स्वास्थ्य, संतुलन और आत्मिक शांति का मार्ग दिखाया है। योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं बल्कि शरीर, मन और आत्मा के बीच सामंजस्य स्थापित करने की एक सम्पूर्ण जीवन पद्धति है। भारतीय परम्परा में भगवान शिव को योग का प्रथम प्रवर्तक माना गया है। यही कारण है कि उन्हें आदि योगी और आदि गुरु की उपाधियां दी गई हैं। योग विज्ञान की उत्पत्ति, उसके प्रसार और आज के वैश्विक स्वरूप को समझने के लिए हमें उसकी जड़ों तक जाना होगा।

योग का शाब्दिक अर्थ

‘योग’ शब्द संस्कृत धातु ‘युज’ से बना है, जिसका अर्थ है जोड़ना या मिलाना। योग व्यक्ति को स्वयं से, प्रकृति से और परम चेतना से जोड़ने का माध्यम है। महर्षि पतंजलि ने योग को चित्त वृत्ति निरोधः कहा है अर्थात् मन की चंचल वृत्तियों को नियंत्रित करना ही योग है। आज के तनावपूर्ण और भागदौड़ भरे जीवन में योग शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक संतुलन बनाए रखने का

प्रभावी साधन बन चुका है। नियमित योगाभ्यास से शरीर में लचीलापन बढ़ता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है, तनाव कम होता है और जीवन में सकारात्मकता का संचार होता है।

भगवान शिव से प्रारम्भ हुई योग की यह दिव्य परम्परा आज वैश्विक आंदोलन का रूप ले चुकी है। आदि योगी द्वारा दिया गया ज्ञान हजारों वर्षों बाद भी उतना ही प्रासंगिक है जितना प्राचीन काल में था। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस केवल एक उत्सव नहीं बल्कि मानवता को स्वास्थ्य, शांति और आत्मबोध की दिशा में प्रेरित करने का अवसर है। वर्ष 2026 की थीम ‘योग फॉर हेल्दी एजिंग’ यह संदेश देती है कि योग केवल जीवन को लम्बा नहीं बल्कि स्वस्थ, सक्रिय और सार्थक भी बनाता है। इसलिए योग को एक दिन के आयोजन तक सीमित न रखकर जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाना ही इसकी सच्ची सार्थकता है।

योग की वैश्विक महत्ता को देखते हुए भारत ने इसे विश्व स्तर पर पहचान दिलाने का प्रयास किया। वर्ष 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने का

प्रस्ताव रखा। इस प्रस्ताव को अभूतपूर्व समर्थन मिला और 177 देशों ने सह-प्रायोजक बनकर इसका समर्थन किया। इसके बाद संयुक्त राष्ट्र ने 11 दिसम्बर 2014 को 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित कर दिया। इसके पश्चात 21 जून 2015 को पहला अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पूरी दुनिया में मनाया गया। तब से प्रत्येक वर्ष यह दिवस विश्व के सैकड़ों देशों में उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। योग ने भारत की सांस्कृतिक विरासत को वैश्विक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के लिए 21 जून की तिथि का चयन भी विशेष महत्व रखता है। यह वर्ष का सबसे लम्बा दिन होता है, जिसे ग्रीष्म अयनांत कहा जाता है। भारतीय आध्यात्मिक परम्परा में इस दिन का विशेष महत्व है। मान्यता है कि इसी कालखंड के बाद भगवान शिव ने सप्तऋषियों को योग का ज्ञान देना प्रारम्भ किया था। यह दिन चेतना, ऊर्जा और आध्यात्मिक जागरण का प्रतीक माना जाता है। इसलिए योग जैसे आध्यात्मिक विज्ञान के लिए 21 जून को सबसे उपयुक्त तिथि माना गया।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2026 की थीम

वर्ष 2026 में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की थीम 'योग फॉर हेल्दी एजिंग' अर्थात् स्वस्थ और दीर्घायु जीवन के लिए योग निर्धारित की गई है। यह विषय बढ़ती आयु के साथ बेहतर स्वास्थ्य, सक्रिय

जीवनशैली और रोगों की रोकथाम में योग की भूमिका को रेखांकित करता है। आज विश्व के अधिकांश देशों में जीवन प्रत्याशा बढ़ रही है। ऐसे में केवल लम्बा जीवन ही पर्याप्त नहीं है बल्कि स्वस्थ, सक्रिय और आत्मनिर्भर जीवन भी आवश्यक है। योग शरीर की लचक, संतुलन, शक्ति और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विशेषज्ञों का मानना है कि नियमित योगाभ्यास बुजुर्गों में गिरने के जोखिम को कम करता है, तनाव घटाता है और जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाता है।

वर्तमान समय में योग की प्रासंगिकता

आधुनिक जीवनशैली से उत्पन्न मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, अवसाद और तनाव जैसी समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं। योग इन चुनौतियों से निपटने का प्राकृतिक और प्रभावी उपाय प्रदान करता है। यह न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है बल्कि मानसिक शांति, भावनात्मक संतुलन और आध्यात्मिक विकास का भी मार्ग प्रशस्त करता है। कोविड-19 महामारी के बाद पूरी दुनिया में योग के प्रति जागरूकता और अधिक बढ़ी है। लोगों ने महसूस किया कि स्वस्थ शरीर और मजबूत मानसिक स्थिति जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकता है। योग इस आवश्यकता को पूरा करने का सशक्त माध्यम बनकर उभरा है।

●●●

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक



पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

हिंदी
विवेक
"We Work For A Better World"

पंजीयन करें

पुस्तक का मूल्य

₹250/-



UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of

HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, Branch - Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884



योग: ध्यान व प्राणायाम का समन्वय

संतुलन



अन्विता सिंह

योग, ध्यान और प्राणायाम का समन्वय स्वस्थ, संतुलित और सफल जीवन की आधारशिला है। योग शरीर को स्वस्थ बनाता है, प्राणायाम जीवन ऊर्जा को संतुलित करता है और ध्यान मन को शांत तथा एकाग्र बनाता है।

भारतीय संस्कृति ने विश्व को अनेक ऐसी अमूल्य धरोहरें दी हैं, जिन्होंने मानव जीवन को स्वस्थ, संतुलित और सार्थक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। योग, ध्यान और प्राणायाम ऐसी ही तीन महान विधाएं हैं, जो हजारों वर्षों से मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं। वर्तमान समय में जब मनुष्य तनाव, चिंता, अवसाद, अनियमित जीवनशैली और विभिन्न शारीरिक रोगों से जूझ रहा है, तब योग, ध्यान और प्राणायाम का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है।

अधिकतर लोग योग, ध्यान और प्राणायाम को अलग-अलग अभ्यास मानते हैं, जबकि वास्तव में ये तीनों एक-दूसरे के पूरक हैं। इनका समन्वय ही व्यक्ति को सम्पूर्ण स्वास्थ्य, मानसिक शांति और आध्यात्मिक उन्नति प्रदान करता है। योग शरीर को स्वस्थ बनाता है, प्राणायाम जीवन ऊर्जा को संतुलित करता है और ध्यान मन को शांत तथा एकाग्र बनाता है। जब इन तीनों का समन्वित अभ्यास किया जाता है, तब व्यक्ति का सर्वांगीण विकास सम्भव होता है।

योग का स्वरूप और महत्व

योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं है बल्कि यह जीवन जीने की एक वैज्ञानिक और आध्यात्मिक पद्धति है। संस्कृत भाषा में योग का अर्थ है- जोड़ना या मिलन। योग व्यक्ति के शरीर, मन और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करने का माध्यम है। योग के नियमित अभ्यास से शरीर मजबूत और लचीला बनता है। यह शरीर की विभिन्न प्रणालियों को सुचारु रूप से कार्य करने में सहायता करता है। योग व्यक्ति को शारीरिक रोगों से बचाने के साथ-साथ मानसिक रूप से भी सशक्त बनाता है।

ध्यान का महत्व

ध्यान योग की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। ध्यान का अर्थ है मन को एक बिंदु पर केंद्रित करना और आंतरिक शांति प्राप्त करना। मनुष्य का मन स्वभाव से चंचल होता है। यह लगातार अतीत और भविष्य के विचारों में भटकता रहता है, जिसके कारण तनाव और चिंता उत्पन्न होती है। ध्यान मन को वर्तमान क्षण में स्थापित करने का अभ्यास है। यह व्यक्ति को अपने भीतर झांकने और स्वयं को समझने का अवसर प्रदान करता है। ध्यान के माध्यम से व्यक्ति मानसिक स्पष्टता, आत्मविश्वास और भावनात्मक संतुलन प्राप्त करता है।

नियमित ध्यान करने से मन की अशांति दूर होती है और व्यक्ति अधिक धैर्यवान तथा सकारात्मक बनता है।

प्राणायाम का महत्व

प्राणायाम योग का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। 'प्राण' का अर्थ जीवन शक्ति और 'आयाम' का अर्थ विस्तार या नियंत्रण है। इस प्रकार प्राणायाम का अर्थ है जीवन ऊर्जा का नियंत्रण और विस्तार।

हमारी सांसें हमारे मन और शरीर से गहराई से जुड़ी होती हैं। जब हम तनाव में होते हैं तो हमारी सांसें तेज और असंतुलित हो जाती हैं, जबकि शांत अवस्था में सांसें सामान्य और संतुलित रहती हैं।

प्राणायाम सांसों को नियंत्रित करके शरीर और मन के बीच सामंजस्य स्थापित करता है।

प्राणायाम के अभ्यास से शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ती है, फेफड़े मजबूत होते हैं और मानसिक तनाव कम होता है। यह व्यक्ति को ऊर्जा, स्फूर्ति और मानसिक स्थिरता प्रदान करता है।

योग, ध्यान और प्राणायाम का समन्वय

योग, ध्यान और प्राणायाम का सम्बंध शरीर, मन और ऊर्जा के बीच संतुलन स्थापित करने से है। इन तीनों को अलग-अलग नहीं देखा जा सकता क्योंकि ये एक-दूसरे को पूर्णता प्रदान करते हैं।

योगासन शरीर को स्वस्थ और अभ्यास के लिए तैयार करते हैं। शरीर में लचीलापन और स्थिरता आने पर व्यक्ति लम्बे समय तक आराम से बैठ सकता है, जो ध्यान और प्राणायाम के लिए आवश्यक है।

प्राणायाम शरीर और मन के बीच पुल का कार्य करता है।

नियंत्रित श्वास के माध्यम से मन की चंचलता कम होती है और व्यक्ति ध्यान की अवस्था में प्रवेश करने के लिए तैयार होता है।

ध्यान मन को शांत और स्थिर बनाता है। जब मन शांत हो जाता है, तब व्यक्ति अपने भीतर की शक्ति और चेतना का अनुभव कर सकता है।

इस प्रकार योग शरीर को तैयार करता है, प्राणायाम ऊर्जा को संतुलित करता है और ध्यान मन को एकाग्र करता है। यही तीनों का वास्तविक समन्वय है।

समन्वित अभ्यास के लाभ

शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार

योगासन शरीर को लचीला और मजबूत बनाते हैं। प्राणायाम फेफड़ों और हृदय को स्वस्थ रखता है, जबकि ध्यान तनाव के कारण होने वाले शारीरिक दुष्प्रभावों को कम करता है। इन तीनों का संयुक्त अभ्यास व्यक्ति को स्वस्थ और ऊर्जावान बनाता है।

मानसिक शांति

आज तनाव और चिंता लगभग हर व्यक्ति के जीवन का हिस्सा बन चुके हैं। योग, ध्यान और प्राणायाम का समन्वित अभ्यास मानसिक शांति प्रदान करता है। इससे मन में सकारात्मक विचारों का विकास होता है और व्यक्ति जीवन की चुनौतियों का सामना बेहतर ढंग से कर पाता है।

भावनात्मक संतुलन

क्रोध, ईर्ष्या, भय और चिंता जैसी नकारात्मक भावनाएं जीवन को प्रभावित करती हैं। ध्यान और प्राणायाम इन भावनाओं को नियंत्रित करने में सहायता करते हैं। योग आत्मनियंत्रण और धैर्य विकसित करता है, जिससे भावनात्मक संतुलन बना रहता है।

आत्मिक विकास

योग, ध्यान और प्राणायाम केवल शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं हैं। इनका अंतिम उद्देश्य व्यक्ति को आत्मिक शांति और आत्मबोध की ओर ले जाना है। इनके अभ्यास से व्यक्ति जीवन के वास्तविक अर्थ को समझने लगता है और आंतरिक संतोष का अनुभव करता है।

●●●

21 जून को सम्पूर्ण विश्व अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाता है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 2014 में इस दिन को मान्यता मिली, परंतु योग को भारत के घर-घर और विश्व के कोने-कोने तक पहुंचाने का श्रेय यदि किसी एक व्यक्ति को जाता है, तो वह हैं योगऋषि स्वामी रामदेव। बाबा रामदेव ने योग को केवल आसन-प्राणायाम तक सीमित नहीं रखा बल्कि उसे जन-आंदोलन का स्वरूप बना दिया।

योग को जन-जन तक पहुंचाने में बाबा रामदेव की भूमिका

2000 के दशक से पहले योग मुख्यतः ऋषि-मुनियों, गुरुकुलों और कुछ संस्थाओं तक ही सीमित था। आम गृहस्थ व्यक्ति के लिए योग कठिन साधना था। बाबा रामदेव ने इस मिथक को तोड़ा।

वर्ष 2003 में आस्था टीवी चैनल पर प्रातः 5 बजे बाबा रामदेव का लाइव योग शिविर प्रसारित होना शुरू हुआ। यह टेलीविजन पर प्रसारित उन कार्यक्रमों में से एक था, जिसे लोगों ने व्यापक रूप से पसंद किया। जब लोगों ने उन्हें टेलीविजन स्क्रीन पर योग करते देखा, तब उन्हें अनुभव हुआ कि योग बिना महंगे उपकरणों और जिम के भी घर के आंगन में किया जा सकता है। अनुलोम-विलोम, कपालभाति और मंडूकासन जैसे सरल योगाभ्यासों को उन्होंने इतनी सहज भाषा में सिखाया कि 8 वर्ष का बालक और 80 वर्ष का बुजुर्ग भी उन्हें आसानी से

करने लगे। बाबा रामदेव ने योग के माध्यम से रोग-मुक्त जीवन का सूत्र दिया। जब लोगों ने शुगर, बीपी, थायरॉइड, मोटापा, कमर दर्द में योग से लाभ पाया तो योग स्वतः घर-घर पहुंच गया। उन्होंने योग को चमत्कार के रूप में नहीं बल्कि विज्ञान के रूप में प्रस्तुत किया। गांव की चौपाल से लेकर शहर की सोसाइटी तक, सुबह-सुबह पार्कों में सामूहिक योग कक्षाएं चलने लगीं। यह बाबा रामदेव की देन है कि आज भारत का आम नागरिक योग को अपनी दिनचर्या का हिस्सा मानता है।

भारत ही नहीं, विदेशों में योग का प्रचार-प्रसार

विदेशों में योग को पहुंचाने के प्रयास कई वर्षों से होते रहे हैं। प्राचीन भारत से बौद्ध भिक्षुओं के माध्यम से योग और भारतीय दर्शन का प्रसार विश्व के विभिन्न देशों तक पहुंचा। इसके बाद स्वामी शिवानंद सरस्वती, स्वामी सत्यानंद सरस्वती तथा श्री श्री रविशंकर जैसे अनेक महान गुरुओं ने भी योग के वैश्विक प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया, लेकिन बाबा रामदेव ने एक मिशन के रूप में 2006 से विदेशों में योग शिविरों की श्रृंखला शुरू की। अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका तथा मध्य-पूर्व के देशों सहित 100 से अधिक देशों में उन्होंने लाखों लोगों को प्रत्यक्ष योग सिखाया। लंदन के वेम्बली स्टेडियम और न्यूयॉर्क के मैडिसन स्क्वायर गार्डन में आयोजित उनके योग शिविरों में एक समय में लगभग 20-20 हजार लोग योगाभ्यास

वैश्विक प्रसार के अग्रदूत स्वामी रामदेव



योग दिवस 21 जून



बृजेश शुक्ला

योग दिवस केवल उत्सव का दिन नहीं बल्कि कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर भी है- उन सभी योगियों के प्रति, जिन्होंने योग की परम्परा को जीवित रखा और विशेष रूप से योगऋषि स्वामी रामदेव के प्रति, जिन्होंने योग को जन-जन तक पहुंचाया।



करते थे। विदेशों में योग को बाबा रामदेव ने स्पष्ट किया कि योग धर्म नहीं, विज्ञान है। इसका सम्बंध शरीर और श्वास से है, किसी पूजा-पद्धति से नहीं। इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण अमेरिका-यूरोप के डॉक्टर, वैज्ञानिक, खिलाड़ी भी योग से जुड़े। जब प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने योग को वैश्विक पहचान दिलाने के लिए प्रयास किए, तब संयुक्त राष्ट्र महासभा में 177 देशों के समर्थन से 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया गया। आम आदमी तभी किसी चीज को अपनाता है, जब उसे उसका प्रत्यक्ष लाभ दिखाई देता है। बाबा रामदेव ने योग के प्रचार-प्रसार के लिए चार सूत्र अपनाए।

रोग-आधारित योग : उन्होंने विभिन्न रोगों के लिए विशिष्ट योग-पद्धतियां बताईं। मधुमेह के लिए मंडूकासन और योगमुद्रासन, थायरॉइड सम्बंधी समस्याओं के लिए उज्जायी एवं सर्वांगासन तथा मोटापे के लिए कपालभाति का अभ्यास सुझाया। इससे लोगों को लगा, यह तो मेरे रोग की दवा है।

निःशुल्क शिविर: पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार और देश भर में लाखों निःशुल्क शिविर लगाए। गरीब-अमीर का भेद मिटाकर योग को सर्वसुलभ बनाया।

स्वदेशी और स्वावलम्बन से जोड़ना : उन्होंने योग को आयुर्वेद से

तथा प्राणायाम को शुद्ध आहार से जोड़ा। उनका मानना था कि दवाओं पर निर्भरता कम करके योग और आयुर्वेद के माध्यम से व्यक्ति अधिक आत्मनिर्भर बन सकता है।

मीडिया और तकनीक का उपयोग : टेलीविजन के बाद यूट्यूब, फेसबुक लाइव और पतंजलि ऐप जैसे डिजिटल माध्यमों के जरिए योग हर मोबाइल तक पहुंच गया। कोविड काल में जब लोग अपने घरों तक सीमित थे, तब बाबा रामदेव के ऑनलाइन सत्रों ने करोड़ों लोगों को श्वसन तंत्र को मजबूत करने तथा स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया। रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए प्राणायाम को एक प्रभावी माध्यम के रूप में व्यापक स्वीकृति मिली।

•••

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका



**हिंदी
विवेक**
We Work For Better World

Combo Offer

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

- भारत की आत्मा **...सेवा**। जो केवल सहायता या दान नहीं है।
- सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।
- सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।
- सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।
- इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।
- आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।



संघ संश्लेष

**हिंदी विवेक की
पंचवार्षिक सहस्यता**

मूल्य ₹ 500 +

**सेवा विवेक
ग्रंथ**

मूल्य ₹ 1800 +

मूल्य ₹ 700

कुल : ₹ 3000/-

आपको मिलेगा मात्र ₹ 2500 में



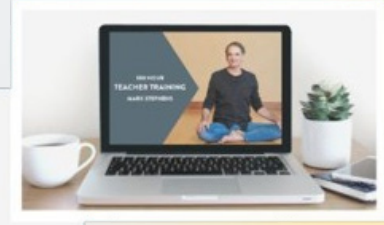
[QR को स्कैन करने के लिए QR कोड स्कैन करें और शिविर नाम से अपना नाम, पता व संपर्क नंबर दर्ज करें।]

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।
Draft or Cheque should be drawn in the name of: **HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK**

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें या...

कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com



आश्रम से मोबाइल तक पहुंचा योग

संचार क्रांति के विस्फोट के बाद योग गुरुकुल के साथ-साथ इंटरनेट तक जा पहुंचा और इसका लगातार विस्तार होता रहा। आज डिजिटल तकनीक ने योग प्रशिक्षण को नई दिशा दी है।

21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की स्थापना के बाद योग के प्रति वैश्विक जागरूकता और भी बढ़ी है। आज योग को हर कोई अपना रहे हैं। बात केवल भारत की नहीं है बल्कि वैश्विक स्तर पर योग को लोगों ने अपनाया है। आधुनिक जीवनशैली से उत्पन्न तनाव, अनियमित दिनचर्या और स्वास्थ्य सम्बंधी चुनौतियों ने लोगों को योग की ओर आकर्षित किया है।

योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं बल्कि शरीर, मन और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करना है। पहले योग मुख्यतः गुरुकुलों, आश्रमों के माध्यम से सिखाया जाता था। संचार क्रांति के विस्फोट के बाद योग गुरुकुल के साथ-साथ इंटरनेट तक जा पहुंचा और इसका लगातार विस्तार होता रहा। आज डिजिटल तकनीक ने योग प्रशिक्षण को नई दिशा दी है। ऑनलाइन कक्षाएं, मोबाइल एप, वीडियो प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया के माध्यम से लोग घर बैठे योग सीख रहे हैं। इस तकनीक

के माध्यम से योग घर-घर तक व जन-जन तक पहुंचा। जो कामकाजी हैं और जो ऑफ लाइन योग नहीं कर सकते हैं, ऐसे लोग तकनीक के माध्यम से आसानी से ऑनलाइन योग करते हैं।

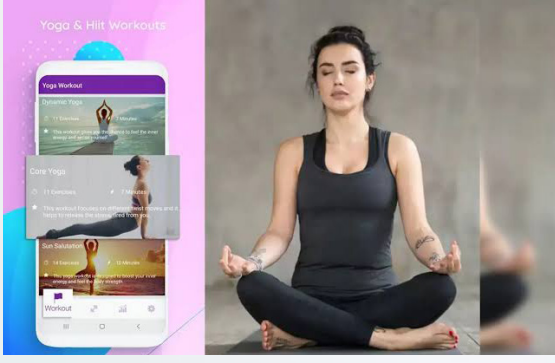
योग की यात्रा हजारों वर्षों पुरानी है, लेकिन आज इसका स्वरूप पहले की तुलना में कहीं अधिक व्यापक और आधुनिक हो गया है। एक समय था जब योग केवल ऋषि-मुनियों, साधकों और आश्रमों तक सीमित था। योग सीखने के लिए गुरु के पास जाकर दीर्घकालीन साधना करनी पड़ती थी। ज्ञान

का हस्तांतरण मौखिक परम्परा और प्रत्यक्ष अभ्यास के माध्यम से होता था। गुरु स्वयं शिष्य की प्रकृति, क्षमता और आवश्यकता के अनुसार प्रशिक्षण देते थे।

अब योग किसी विशेष वर्ग या क्षेत्र तक सीमित नहीं है। योग का प्रशिक्षण कोई भी ले सकता है। विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, कॉर्पोरेट संस्थानों, सेना, खेल जगत तथा चिकित्सा क्षेत्र में



स्निग्धा अवतंस



भी योग को अपनाया जा रहा है। योग प्रशिक्षक बनने के लिए विभिन्न प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम और डिप्लोमा कार्यक्रम भी संचालित किए जा रहे हैं।

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में डिजिटल माध्यमों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। ऑनलाइन कक्षाएं, वेबिनार, मोबाइल एप, यूट्यूब चैनल और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने योग को घर-घर तक पहुंचा दिया है। कोरोना महामारी के दौरान तो यह परिवर्तन और अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई दिया, जब लाखों लोगों ने ऑनलाइन माध्यम से योग का अभ्यास आरम्भ किया। योग केवल शारीरिक मुद्राओं का अभ्यास नहीं

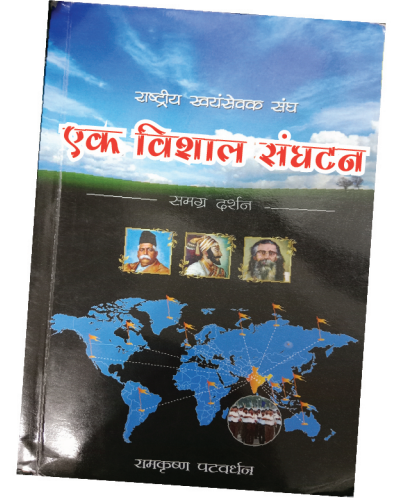
है। योग का वास्तविक स्वरूप आत्मानुशासन, मानसिक शांति, नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक उन्नति से जुड़ा हुआ है। शिक्षा संस्थानों में भी योग को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जा रहा है। नई पीढ़ी को तनाव प्रबंधन, एकाग्रता और स्वस्थ जीवनशैली के लिए योग का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। अनेक विश्वविद्यालय योग में स्नातक, स्नातकोत्तर और शोध कार्यक्रम चला रहे हैं। हालांकि योग के बढ़ते व्यावसायीकरण ने कुछ चुनौतियां भी पैदा की हैं। कई स्थानों पर योग को केवल फिटनेस गतिविधि के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जिससे उसके दार्शनिक और आध्यात्मिक पक्ष की उपेक्षा होती है। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि योग की शिक्षा उसके मूल स्वरूप और उद्देश्यों के अनुरूप दी जाए। भारतीय परम्परा में योग आत्म-विकास और लोककल्याण दोनों का माध्यम रहा है। बदलती तकनीक और आधुनिक शिक्षण प्रणालियों ने इसके प्रसार को नई गति दी है, लेकिन इसकी आत्मा गुरु-शिष्य परम्परा, अनुशासन और निरंतर अभ्यास में ही निहित है। यदि आधुनिकता और परम्परा का संतुलित समन्वय बना रहे तो योग आने वाले समय में मानवता के लिए और भी अधिक उपयोगी सिद्ध होगा।



राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका



शुल्क
₹ 500



रा. स्व. संघ की स्थापना से लेकर शतकपूर्ति की यात्रा के विभिन्न पड़ावों तथा भविष्य के उद्देश्यों का सम्पूर्ण संकलन व आंकलन करने वाली पुस्तक



UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाईन पंजीयन करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of: **HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA-HINDI VIVEK**

Bank : Bank of Maharashtra **Branch :** Prabhadevi

A/C No. : 60085108000 **IFSC :** MAHB0000318

सम्पर्क - 9594991884 Email : hindivivekvargani@gmail.com

50+
YEARS OF
MOMENTUM







दि कल्याण जनता
सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक

बदलत्या हवामानात
स्वतःची काळजी घ्या...
आणि कल्याण जनता
बँकिंग अॅप द्वारे तुमची
सर्व बँकिंग कामे करा
- सुरक्षितपणे, सहज
आणि घरबसल्या.



अर्थ सहकारेण कल्याणम्

TOLL FREE: 1800 233 1919  kalyanjanata.bank.in    KJSBank



भारतीय नाविकों की मौत से जुड़े कड़वे प्रश्न



प्रमोद जोशी

करतूत

अमेरिकी सेना ने ओमान के तट पर कॉमर्शियल जहाज 'सेटेबेलो' पर गत 9 जून को हमला किया। जहाज के चालक दल में 24 भारतीय सदस्य थे, जिनमें से 21 को बचा लिया गया, पर तीन नाविकों की मृत्यु हो गई।

होर्मुज जलडमरूमध्य विश्व के सबसे महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों में से एक है, जहां से वैश्विक ऊर्जा व्यापार का एक बड़ा हिस्सा संचालित होता है। हजारों भारतीय नाविक इस क्षेत्र से नियमित रूप से गुजरने वाले जहाजों पर काम करते हैं। अमेरिका की करतूतों से अब भारत के नाविकों की मनोदशा पर गम्भीर प्रभाव पड़ेगा। दुनिया के व्यावसायिक पोतों पर भारतीय नाविक सबसे बड़ी संख्या में काम करते हैं।

होर्मुज जलसंधि और ओमान की खाड़ी के पास फैले समुद्री संकट के कारण इन दिनों कम से कम 562 भारतीय नाविक भारतीय-ध्वज वाले 13 जहाजों पर फंसे हुए हैं। केंद्रीय शिपिंग मंत्रालय की जानकारी के अनुसार होर्मुज जलसंधि के पश्चिम में 329, ओमान की खाड़ी में 233 भारतीय नाविक फंसे हैं। उनके अलावा समग्र रूप से पूरे खाड़ी क्षेत्र में 18,000 से 20,000 के लगभग भारतीय नाविक काम कर रहे हैं, जो इस बढ़ते क्षेत्रीय तनाव और समुद्री जोखिमों से प्रभावित हुए हैं।

भारत का समुद्री मामलों का महानिदेशालय (डीजीएमए) व्यापारिक जहाजों और नाविकों के प्रमाणीकरण पर नियामक निगरानी रखता है। उसका अधिकार क्षेत्र मुख्य रूप से भारतीय ध्वज वाले जहाजों से सम्बंधित है, जबकि भारतीय नाविक अनेक दूसरी विदेशी शिपिंग कम्पनियों के लिए भी काम करते हैं। भारतीय विदेश मंत्रालय विदेशों में भारतीय नागरिकों, राजनयिक सम्बंधों और यात्रा सम्बंधी सलाहों पर अधिकार रखता है। बावजूद इसके सबके बारे में सूचनाएं भी उपलब्ध नहीं हैं।

इस प्रसंग ने जहां नाविकों की सुरक्षा से जुड़े प्रश्नों को उजागर किया है, वहीं भारत-अमेरिका रिश्तों में कड़वाहट पैदा की है। पिछले एक साल से ये रिश्ते यों भी बिगड़े हुए हैं, पर इस घटना ने आम भारतीय के मन में गहरी ठेस पहुंचाई है। अमेरिका अपने आप को भारत का मित्र होने का दावा करता है। प्रश्न है कि वह कैसा मित्र है? कोई 'मित्र' क्या ऐसी जघन्य कार्रवाई और निर्दयता दिखाता है? पोत को रोकने का उनके पास क्या कोई

दूसरा तरीका नहीं था, ताकि किसी की जान नहीं जाती? सीधे ऐसे असैनिक पोत पर मिसाइल मार दी, जिसका लड़ाई से कोई सम्बंध नहीं था। कहा यह भी जा रहा है कि ईरान का काफी खनिज तेल चीन जाता है। बड़ी संख्या में चीनी जहाजों ने इस नाकेबंदी को तोड़ा है, पर इनमें से किसी पर हमला नहीं हुआ।

क्या अमेरिका भारत को जानबूझकर कड़ा संदेश दे रहा है? विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने इस मामले पर अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रूबियो से बात की और अपना कड़ा विरोध भी जताया है। रूबियो ने बजाए सहानुभूति या खेद व्यक्त करने के, उल्टे चेतावनी दे दी कि खाड़ी क्षेत्र में अमेरिकी नाकेबंदी का उल्लंघन और ईरानी तेल की अवैध ढुलाई स्वीकार नहीं की जाएगी। इस मामले से जुड़े अमेरिकी विवरणों में इन मृत्यु की चर्चा न होना और दावा करना कि 'सभी कमर्शियल पोतों को अमेरिकी सेना के आदेशों का पालन करना होगा' अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन भी है।



युद्ध के दौरान तटस्थ व्यापारिक जहाजों पर हमले अंतरराष्ट्रीय कानून का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इस घटना ने समुद्री कानून से जुड़े पहलुओं और पश्चिम एशिया संघर्ष में भारतीय नाविकों की असुरक्षा को उजागर किया है। दुनिया भर में भारतीय नाविक प्रसिद्ध हैं, अपनी कुशलता और अनुशासन के कारण ही वैश्विक जहाजरानी में सबसे बड़ी संख्या में लगभग 12 प्रतिशत भारतीय नाविक हैं। उनकी संख्या लगभग 3.08 लाख है। इन समुद्री रास्तों से गुजरने वाले लगभग हर व्यापारिक जहाज पर भारतीय क्रू होते हैं। हालांकि अमेरिका और ईरान के बीच समझौता हो गया है, पर पश्चिम-एशिया में तो लड़ाई किसी भी समय भड़क सकती है। क्या उनके सिर पर मौत मंडराती रहेगी?

यह पहली घटना नहीं है। इसके पहले 8 जून और 11 जून को भी खाड़ी क्षेत्र में भारतीय क्रू वाले दो अन्य जहाजों पर हमला किया गया था, हालांकि उनमें किसी की मृत्यु नहीं हुई और सभी

नाविकों को बचा लिया गया। अमेरिका-ईरान संघर्ष शुरू होने के बाद से यह पहला अवसर नहीं है जब भारतीय किसी हमले या उसकी वजह से जनित किसी दुर्घटना का शिकार हुए हैं। अब तक कम से कम ऐसी लगभग 9 घटनाओं में 13 भारतवासियों की जान जा चुकी है। इन 9 में से 7 घटनाएं ईरान के हमले से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़ी रहीं, जबकि एक घटना अमेरिका से जुड़ी रही। ज्यादातर पोत भ्रम के शिकार हुए हैं।

इस घटना के साथ ही वैश्विक जहाजरानी की ग्लोबल-संरचना के बहुत से छिद्र दिखाई पड़ने लगे हैं। एक पोत पलाऊ में पंजीकृत हो सकता है, दुबई का ऑपरेटर उसका संचालन कर सकता है और भारतीय चालक दल संचालन कर सकता है। इससे पूरी व्यवस्था को लेकर भ्रम पैदा होते हैं। समुद्री कानून के विशेषज्ञों के बीच जहाजों पर हमलों और कथित 'प्रतिबंधित जहाजों' की भूमिका को लेकर एक बार फिर से बहस छिड़ गई है।

प्रतिबंधित पोत वह पोत होता है जिसे किसी सरकार या अंतरराष्ट्रीय संगठन द्वारा लगाए गए आर्थिक, व्यापारिक या सुरक्षा प्रतिबंधों के अंतर्गत नामित किया जाता है। उनके स्वामित्व, निषिद्ध व्यापार में संलिप्तता, प्रतिबंधित माल ढुलाई, आतंकवाद से सम्बंध या प्रतिबंधों से बचने के प्रयासों, धोखाधड़ी वगैरह के कारण प्रतिबंध लगाए जा सकते हैं।

किसी एक देश द्वारा प्रतिबंधित पोत पर स्वतः ही हर जगह प्रतिबंध लागू नहीं हो जाता। जब तक संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का कोई बाध्यकारी प्रस्ताव न हो, एकतरफा प्रतिबंध आमतौर पर केवल प्रतिबंध लगाने वाले देश के अधिकार क्षेत्र में और उसके कानूनों के अधीन संस्थाओं पर ही लागू होते हैं। उदाहरण के लिए, अमेरिकी विदेश सम्पत्ति नियंत्रण कार्यालय द्वारा प्रतिबंधित पोत भारतीय कानून के अंतर्गत स्वतः ही अवैध नहीं हो जाएगा।

जब तक पोत का पंजीकरण रद्द नहीं होता, उसे हिरासत में नहीं लिया जाता या उसका ध्वज-देश कोई कार्रवाई नहीं करता, तब तक उसका परिचालन जारी रहता है। वे कड़ी नियामक-मर्यादाओं का पालन करते हैं। एक बार वे समुद्र में आ गए तो किसी का आदेश होने पर जादू की छड़ी जैसे गायब नहीं हो सकते हैं। इस समय बात पोतों की सुरक्षा से ज्यादा नाविकों के जीवन की है। किसी अमेरिकी नागरिक की जान जाती तो अमेरिका की प्रतिक्रिया क्या ऐसी ही होती? इन निर्दोष भारतीयों की क्षतिपूर्ति उसे ही करनी चाहिए।

●●●

इंडोनेशिया में भूकम्प व उसका प्रभाव

आपदा

जून 2026 में दोनों देशों में आए लगातार भूकम्पों ने न केवल भूगर्भीय सक्रियता की ओर ध्यान आकर्षित किया है बल्कि भूकम्पों से उत्पन्न पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभाव जलवायु तथा पारिस्थितिकी तंत्र को दीर्घकालिक रूप से प्रभावित कर सकते हैं।

भारत से सैकड़ों मील दूर 16 जून 2026 की सुबह 6.7 तीव्रता के भूकम्प से धरती कांप उठी। इंडोनेशिया में 10 बजकर 27 मिनट पर आए भूकम्प का केंद्र मध्य सुलावेसी प्रांत के पालू से 43 किमी पूर्व दक्षिण-पूर्व में 10 किमी की गहराई में था। इसके साथ ही यहां कई झटके अनुभव किए गए, जिनमें भूकम्प की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 5.2 मापी गई। इसके अलावा पालू, सिगी, डोंगगाला और टोजो उना-उना क्षेत्रों में भी झटके अनुभव किए गए। इसके एक दिन पहले 15 जून 2026 को धरातल से 117 किमी गहराई पर फिलीपींस के मिंडानाओ में 6.3 तीव्रता का भूकम्प आया, जबकि 8 जून को फिलीपींस में आए शक्तिशाली भूकम्प की तीव्रता 7.7 थी। इंडोनेशिया व फिलीपींस में लगातार आने वाले भूकम्प का मुख्य कारण इसकी प्रशांत महासागर 'रिंग ऑफ फायर' क्षेत्र में अवस्थिति है, जो प्रशांत महासागर के चारों ओर ज्वालामुखियों और भ्रंश रेखाओं का एक विशाल चाप है। यहां भूकम्प आने के लिए चार प्रमुख भौगोलिक परिस्थितियां पाई जाती हैं, जिसमें सागर तथा स्थल के मिलन बिंदु होने, न वलित पर्वतों का क्षेत्र की स्थिति होने तथा ज्वालामुखी क्षेत्र व विनाशी प्लेट सीमाओं का अपसरण जैसे कारक हैं। यही कारण है कि प्रशांत महासागर के दोनों तटीय भागों में असंख्य भूकम्प आते हैं। समस्त ग्लोब का लगभग 63 प्रतिशत भूकम्प इसी क्षेत्र में आते हैं। जलवायु परिवर्तन का भूकम्प की घटनाओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, लेकिन भूकम्पों का जलवायु पर प्रभाव पड़ सकता है। भूकम्प के कारण हजारों घर और अन्य संरचनाएं नष्ट हो जाती हैं, जिससे पुनर्निर्माण

कार्य बढ़ जाता है। इस प्रक्रिया में सीमेंट और स्टील के अत्यधिक उपयोग करने से कार्बन उत्सर्जन में वृद्धि होती है। पुनर्निर्माण के उद्देश्य से लकड़ियों का उपयोग करने के लिए आस-पास के जंगलों का कटान किया जाता है, जो अंततः जलवायु को प्रभावित करती है। भूकम्प के कारण तटीय भागों में स्थित मैंग्रोव के जंगल के अलावा मूंगा वृक्षों को भी हानि पहुंचती है तथा तटीय पारिस्थितिकी तंत्र के विनाश और सुनामी जैसी आपदाओं के रूप में दिखता है। इसके अलावा पहाड़ों व ढलानों की मिट्टी को अस्थिर कर देते हैं, जिससे बड़ी मात्रा में भूस्खलन होता है। भीषण भूकम्प और इनके कारण होने वाला भूस्खलन बड़े पैमाने पर पेड़ों और प्राकृतिक आवासों को नष्ट कर देते हैं, जिससे उस क्षेत्र के स्थानीय मौसम चक्र और जैव विविधता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है और स्थानीय कार्बन सिंक प्रभावित होता है। समुद्री भागों में भूकम्प के कारण अधिकतर उत्पन्न सुनामी आने और सुनामी से दलदली मिट्टी का कारण बन जाता है, जो दीर्घकालिक रूप में जलवायु को प्रभावित कर सकता है। इसलिए आने वाले समय में बाढ़, चक्रवात और अत्यधिक वर्षा जैसी मौसमी आपदाओं का प्रभाव और अधिक विनाशकारी हो जाता है।

जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से तटीय समुदाय सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। समुद्र के बढ़ते जलस्तर से तटीय शहरों और समुदायों में बाढ़, कटाव और जलभराव का संकट बढ़ जाता है। यह विशेष रूप से दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों जैसे इंडोनेशिया के लिए चिंता का विषय है, जिनकी समुद्री सीमाएं लम्बी हैं और जिनकी जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा तटीय क्षेत्रों में रहता है।



डॉ. नवीन कुमार मिश्र

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली
सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका



पंजीयन करें

सेवा विवेक
ग्रंथ

मौलिक एवं संग्रहणीय ग्रंथ, स्वयं एवं
परिजनों के लिए पंजीयन करें

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य



भारत की आत्मा ...सेवा!
जो केवल सहायता या दान
नहीं है।



सेवा का सही अर्थ है
कर्तव्य, संवेदना और
सामाजिक उत्तरदायित्व का
समन्वय।



सेवा को भावनात्मक
कार्य से आगे ले जाकर
विचारशील, सामाजिक
प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत
करना।



सेवा के पीछे की भारतीय
दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को
उजागर करना।



इस विचार को बल देना
कि सेवा व्यक्ति को
संस्कारित कर समाज को
संगठित एवं सशक्त करने का
प्रभावी माध्यम है।



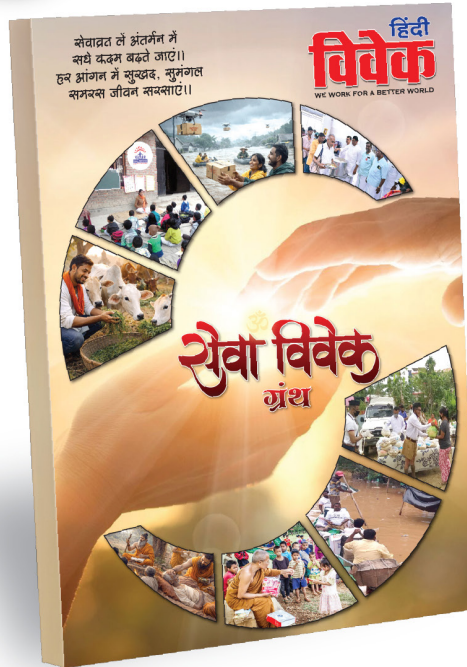
आदर्श सेवा कार्यों को
संकलित कर समाज के
प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख
प्रस्तुत करना।

प्रकाशन पूर्व मूल्य

600/-

ग्रंथ का
मूल्य

₹ 700/-



देश के गणमान्य विशेषज्ञों एवं लेखकों की कलम से समृद्ध विषय वस्तु से परिपूर्ण ग्रंथ



UPI पेमेंट नोटबंदी के लिए QR कोड
स्कैन करें और बैंकिंग खाता में अपना
नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of: HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें

कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884

Email : hindivivekvargani@gmail.com



आपातकाल में संघ की भूमिका



योगदान

25 जून 1975 को घोषित आपातकाल में नागरिक स्वतंत्रताओं पर अंकुश लगाया गया, विपक्षी नेताओं को जेलों में बंद किया गया और प्रेस पर सेंसरशिप थोप दी गई। इस चुनौतीपूर्ण दौर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय रही, जिसने प्रतिबंध, गिरफ्तारी और दमन के बाद भी अपने स्वयंसेवकों के माध्यम से लोकतंत्र बहाली के आंदोलन को निरंतर गति प्रदान की।



प्रो. अरुण कुमार भगत

आपातकाल के उस भयावह वातावरण में भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने आपातकाल-विरोधी आंदोलन की ज्वाला को जलाए रखा। आपातकाल में गिरफ्तार कुल 1 लाख 10 हजार लोगों में 70 से 80 हजार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक थे। संघ के अनेक प्रचारकों और स्वयंसेवकों ने प्राणों की आहुति देकर भी उस आंदोलन की प्रज्वलित लौ को बुझने नहीं दिया। आपातकाल के समय सक्रिय अनेक पत्रकारों और सम्पादकों ने भी स्वीकार किया कि सन् 1974 'सम्पूर्ण-क्रांति' और उसके बाद 25 जून, 1975 की घोषित आपातकाल के विरुद्ध संघर्ष में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की न केवल महत्वपूर्ण भूमिका रही अपितु उसे जीवंत तथा प्राणवान बनाए रखा।

स्वतंत्रता की दूसरी लड़ाई के रूप में प्रतिष्ठित 'सम्पूर्ण-क्रांति' का नेतृत्व लोकनायक जयप्रकाश नारायण के हाथों में अवश्य था, परंतु राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ परदे के पीछे रहकर इस आंदोलन का सूत्रधारण कर रहा था। सच तो यह है कि संघ के आनुषंगिक छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की अगुआई में 18 फरवरी 1974 को गठित गैर साम्यवादी छात्र संगठनों द्वारा 'बिहार प्रदेश छात्र संघर्ष समिति' का गठन किया गया और 6 अप्रैल 1974 को समिति ने ही आंदोलन का सम्पूर्ण नेतृत्व जयप्रकाश नारायण को स्वीकार करने का आग्रह किया था।

जे.पी. आंदोलन के परिणाम के प्रति प्रारम्भ में बहुत आशान्वित नहीं थे, पर जब संघ के नाना जी, गोविंदाचार्य, रामबहादुर राय, प्रो. रमाकांत पांडेय, डॉ. शैलेंद्रनाथ श्रीवास्तव आदि जैसे समर्थ एवं त्यागी सिपाहियों का अपूर्व योगदान देखा तो उन्हें विश्वास हो गया कि बिहार का यह आंदोलन न केवल बिहार का मानचित्र बदलने की क्षमता रखता है अपितु उसके मारक प्रभाव का विस्तार दिल्ली तक हो जाएगा।

बिहार छात्र-आंदोलन के आर्किटेक्ट बहुवचन में थे, पर मुख्य रूप से दो व्यक्ति थे- 1. के.एन. गोविंदाचार्य और 2. रामबहादुर राय। गोविंदाचार्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक थे। रामबहादुर राय अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय सचिव और बिहार के प्रभारी थे। प्रो. पांडेय लिखते हैं कि प्रमुख नक्सलवादी नेता (कम्युनिस्ट) सत्यनारायण सिन्हा से मिलने और आंदोलन के लिए सहयोग मांगने के लिए जे.पी. कोलकाता भी गए थे। श्री सिन्हा ने जे.पी. से कहा था कि आप आर. एस.एस. को छोड़ दीजिए तो हमलोग आपका साथ देंगे, इसपर जे.पी. ने कहा था कि यह आंदोलन मेरा नहीं है बल्कि छात्रों और आरएसएस का है।

इंदिरा गांधी की केंद्रीय सरकार ने जब आपातकाल की घोषणा कर भारतीय लोकतंत्र पर अंकुश लगाते हुए विपक्ष की गतिविधियों पर पाबंदी लगा दी और प्रेस पर सेंसरशिप थोप दी, तब राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका और बढ़ गई। संघ के स्वयंसेवकों ने 26 जून 1975 से लेकर 18 जनवरी 1977 को प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्र के नाम संदेश द्वारा मार्च में लोकसभा चुनाव कराने की घोषणा और फिर 21 मार्च 1977 को जनता पार्टी की लोकसभा में स्पष्ट बहुमत मिलने तक जिन महत्वपूर्ण भूमिकाओं का निर्वहण किया, वह अप्रतिम और अनुपम है।

आपातकाल की घोषणा के साथ ही जनसंघ और विद्यार्थी परिषद सहित संघ के अनेक आनुषंगिक संगठनों के कार्यकर्ताओं और अधिकारियों की गिरफ्तारी से भी जब सरकार का मन नहीं भरा तो 4 जलाई 1975 को एक विशेष आदेश निकालकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध लगा दिया। लोक संघर्ष समिति के द्वारा 15 जुलाई से 15 अगस्त 1975 तक देश के सभी जिलों, अनुमंडलों और कस्बों में सत्याग्रह का कार्यक्रम संघ के स्वयंसेवकों द्वारा चलाया गया। ध्यान देने योग्य यह है कि लोक संघर्ष समिति के महामंत्री नानाजी देशमुख थे, जो संघ के वरिष्ठ प्रचारक थे। संघ के स्वयंसेवक और अधिकारी ही आपातकाल के 19 महीनों तक प्रतिबंध के बाद भी गुप्त रूप से आंदोलन चलाते रहे और सत्याग्रह कर जेल को भरते रहे। जेल में बंद संघ के अधिकारियों से मार्गदर्शन पाकर ही गुप्त रूप से आंदोलनरत स्वयंसेवकों ने 14 नवम्बर से 26 जनवरी 1976 (गणतंत्र दिवस) तक पूरे देश में विशाल सत्याग्रह चलाया और हजारों स्वयंसेवकों ने गिरफ्तारी दी। सच पूछा जाए तो आपातकाल के दौरान सत्याग्रह की सफलता का पूरा श्रेय संघ को ही दिया जाता है।

संघ के अधिकारियों द्वारा 'लोक संघर्ष समिति' के बैनर तले दूसरी बार 14 नवम्बर 1976 से आयोजित सत्याग्रह की सफलता को देखकर इंदिरा गांधी इतना भयभीत हो गई थीं कि उन्हें सत्याग्रह के ठीक 5वें दिन 18 नवम्बर 1976 को देश के सभी राज्यों में पुलिस महानिदेशकों की बैठक दिल्ली में बुलाना पड़ा था। इंदिरा गांधी ने उस सम्मेलन में कहा था- 'गुप्तचर विभाग की रिपोर्टों में लगातार यह कहा जा रहा था कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक प्रकार से समाप्त हो गया है या दब गया है, किंतु देशव्यापी सत्याग्रह के पीछे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की जिस शक्ति का प्रदर्शन आज हो रहा है, उससे यह सिद्ध हो गया है कि संघ की शक्ति समाप्त नहीं हुई है। उसकी प्रहार-क्षमता और बढ़ी है। हमारे पास ऐसे राजनीतिज्ञ हैं, जो हमारे गुप्तचर विभाग से भी कई अधिक समाचार देते हैं। संघ के बारे में उनका आकलन गुप्तचर

विभाग से भी अधिक युक्तिसंगत है। सत्याग्रह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ चला रहा है, यह हमारी खबर है।'

संघ के अनेक प्रमुख कार्यकर्ता बंदी बना लिए जाने के कारण संघ के संगठन का देशव्यापी ताना-बाना कुछ परिमाण में विश्रुंखलित हो गया था। सत्याग्रह को सुचारु रूप से चलाने के लिए इस ढांचे को पूर्ववत बनाना आवश्यक था। इस दृष्टि से जो मुख्य कार्यकर्ता बाहर थे, उन्होंने देशभर में भ्रमण करते हुए तथा कार्यकर्ताओं की बैठकें लेते हुए नई रचना खड़ी की। माधवराव मुले, मोरोपंत पिंगले, बापूराव मोघे, प्रो. राजेंद्र सिंह उपाख्य रज्जूभैय्या, डॉक्टर बाबाजी थते, भाऊराव देवरस, दत्तोपंत ठेंगड़ी आदि केंद्रीय नेताओं ने इस रचना के पश्चात स्थान-स्थान के प्रमुख कार्यकर्ताओं को जुटाकर सत्याग्रह विषयक निर्देश दिए और उनका मार्गदर्शन किया। बैठकों में उन्होंने कार्यकर्ताओं का सत्याग्रह हेतु मानस बनाने के साथ-साथ आवश्यक सूचनाएं प्रदान कीं और उन्हें तहसील तक पहुंचाने की व्यवस्था करने को कहा।

आपातकाल के दौरान स्वतंत्रता की दूसरी लड़ाई लड़ते हुए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवकों ने अपने प्राणों को भी न्योछावर किया। सन् 1977 में आपातकाल में सत्ता के तानाशाही नीति और पुलिस प्रशासन की अत्याचारों की जांच-पड़ताल के लिए गठित शाह आयोग ने चार खंडों में अपनी विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की थी। इस आयोग ने उस समय पुलिस प्रताड़ना एवं जेल की यातनाओं के कारण लोकतंत्र की वेदी पर अपने प्राणों का बलिदान करने वाले हुतात्माओं की वास्तविक संख्या का पता लगाने के लिए जांच-पड़ताल की थी, किंतु उनके पास केवल 12 राज्यों के 87 बलिदानियों की सूची प्राप्त हो सकी थी। बाद में सुप्रसिद्ध लेखक प्र.ग. सहस्रबुद्धे और माणिकचंद वाजपेयी के प्रयास से देश के सभी राज्यों के 107 हुतात्माओं की सूची तैयार की जा सकी, जिसमें 61 स्वयंसेवक थे।

आपातकाल के दौरान संघ के प्रचारक रहे अटल बिहारी वाजपेयी एवं लालकृष्ण आडवाणी सहित दर्जनों प्रचारकों और अधिकारियों ने आपातकाल जैसी घोर यातना के दिनों में भी स्वयंसेवकों का मनोबल बनाए रखा और भूमिगत आंदोलन को जीवंत बनाए रखा।

उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में यह प्रमाणित होता है कि 25 जून 1975 को केंद्र सरकार द्वारा घोषित आपातकाल के दौरान राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अधिकारियों, प्रचारकों और स्वयंसेवकों के साथ-साथ संघ के आनुषंगिक संगठनों के कार्यकर्ताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहण किया।

●●●

आपातकाल का काला अध्याय



डॉ. राजेश्वर उनियाल

25 जून 1975 की मध्य रात्रि आपातकाल की घोषणा हुई। इंदिरा गांधी ने केवल आपातकाल ही नहीं लगाया बल्कि अनुच्छेद 19 के अंतर्गत नागरिकों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और प्रेस की स्वतंत्रता पर अंकुश लग गया। कई मौलिक अधिकारों का भी हनन हुआ।

राजनारायण ने सन 1971 में रायबरेली में हुए लोकसभा चुनाव में इंदिरा गांधी द्वारा किए गए चुनावी धांधली के विरुद्ध इलाहाबाद उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की थी, जिस पर न्यायमूर्ति जगमोहनलाल सिन्हा ने 12 जून 1975 को इंदिरा गांधी को दोषी सिद्ध किया और उनके 6 साल तक चुनाव लड़ने पर प्रतिबंध लगा दिया। इन सब घटनाओं से घबराकर इंदिरा सरकार ने 25 जून 1975 की रात को बिना मंत्रिमंडल की लिखित सहमति के तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद से मिलकर देश में अनुच्छेद 352 के अंतर्गत आपातकाल लगा दिया और 26 जून 1975 की प्रातःकाल आकाशवाणी से स्वयं इसकी घोषणा भी कर दी। सामान्यतः आपातकाल अनुच्छेद 352 के अंतर्गत आंतरिक अशांति या सैनिक विद्रोह होने पर ही लगाया जाता है, लेकिन इंदिरा

गांधी ने केवल अपने निजी स्वार्थ के लिए संविधान की निर्मम हत्या की।

इंदिरा गांधी ने केवल आपातकाल ही नहीं लगाया बल्कि अनुच्छेद 19 के अंतर्गत नागरिकों की स्वतंत्रता के अधिकार को भी निलम्बित कर दिया अर्थात् अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और प्रेस की स्वतंत्रता पर अंकुश लग गया। 25 जून की रात्रि को सभी समाचार पत्रों के कार्यालयों की बिजली काट दी गई। इसी प्रकार भारत में मेटेनैस ऑफ इंटरनल सिक्योरिटी एक्ट, जिसे मीसा के नाम से जाना जाता है, वह लगाकर जयप्रकाश नारायण, अटल बिहारी वाजपेई, लालकृष्ण आडवाणी, जार्ज फर्नांडीज एवं मोरारजी देसाई जैसे लगभग 36000 लोगों को जेल में डाल दिया। इसी के साथ सभी समाचार पत्रों पर कड़े नियम लागू कर दिए। उसके बाद समाचार केवल सरकार की संस्तुति पर ही छपते थे। इसी



तरह यूएनआई व पीटीआई जैसी समाचार एजेंसियों को सरकारी नियंत्रण में ले लिया गया। लोकसभा का कार्यकाल भी 5 वर्ष से बढ़ाकर 6 वर्ष कर दिया। इतना ही नहीं तो संविधान में 38वें और 39वें संशोधन कर राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री एवं स्पीकर के चुनाव को न्यायालय के अधिकार क्षेत्र से बाहर कर दिया और वह स्वयं न्यायालय के नियंत्रण से मुक्त हो गई।

आपातकाल का सबसे निकृष्ट संवैधानिक संशोधन 42वां था, जिसे की लघु संविधान भी कहा जाता है। सबसे बड़ी बात कि इंदिरा गांधी ने भारत के संघीय ढांचे को तोड़कर केंद्र को लगभग सारे अधिकार दे दिए। इससे इंदिरा गांधी ने देश के सर्वस्व अधिकार अपने हाथों में ले लिया। इसमें संसद को संविधान संशोधन करने की असीमित शक्तियां दे दी गईं।

संविधान की प्रस्तावना को संविधान की आत्मा माना गया है। संविधान निर्माताओं ने संविधान की मूल धारणा में भारत को एक पंथनिरपेक्ष राष्ट्र घोषित किया था, जबकि तानाशाह इंदिरा गांधी ने सन 1976 में विपक्ष के लगभग सभी सांसद जेल में थे, संविधान की आत्मा को छिन्न-भिन्न करते हुए पंथनिरपेक्ष के स्थान पर भारत को धर्मनिरपेक्ष और समाजवादी राष्ट्र बनाया। उसके बाद से ही भारत में सेकुलर शब्द जोड़ा गया और विपक्षी दल उसकी आड़ में हिंदू धर्म के प्रतीकों, मूल्यों व परम्पराओं पर लगातार कुठाराघात कर रहे हैं।

आपातकाल में सबसे अधिक अत्याचार व अन्याय तत्कालीन भारतीय जनसंघ और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ किया गया। आपातकाल के 5 दिन बाद संघ के पू. सरसंघचालक श्री बालासाहेब देवरस जी को पुणे के यरवड़ा जेल में बंद कर दिया गया। इसी के साथ संघ के सभी पदाधिकारियों को बिना कारण जेल में बंद कर दिया गया। संघ से सम्बंधित अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद व भारतीय मजदूर संघ सहित लगभग सभी अनुसंगिक संगठनों पर भी प्रतिबंध लगा दिया गया। संघ के कार्यकर्ताओं को जेल में डाल दिया गया। आपातकाल के समय सबसे अधिक बलिदान संघ के स्वयंसेवकों ने ही दिया। संघ के लगभग 25000 कार्यकर्ताओं को मीसा में बंदी बनाया गया और इस दौरान हुए अत्याचारों के कारण 100 से अधिक कार्यकर्ता स्वर्गवासी हो गए तथा कई जेल की यातनाओं को सहने के

कारण आपातकाल के बाद अस्वस्थ हो गए, जिनमें से बाद में कई दिवंगत भी हो गए।

संविधान की हत्या करने वाली इंदिरा गांधी ने आपातकाल के दौरान परिवार नियोजन का कार्यक्रम चलाया। हिंदुओं की जबरन नसबंदियां करवाई गईं। हजारों ऐसे नवयुवकों की जबरन नसबंदी कराई, जिनका विवाह भी नहीं हुआ था। इससे हिंदुओं की जनसंख्या बढ़ोतरी में गिरावट आई और जो मुसलमान स्वतंत्रता के समय भारत में केवल 10% थे, वे आज 20% से अधिक हो गए हैं।

आपातकाल की आड़ में इंदिरा गांधी के पुत्र संजय गांधी ने जनता के साथ अत्यधिक दुर्यवहार किया था। यूथ कांग्रेस के गुंडे हर गली-मोहल्ले में अपनी दादागिरी दिखाते हुए आमजन को परेशान करते थे। पुलिस व प्रशासन एक तरह से पंगु हो गया था। आमजन की कहीं कोई सुनवाई नहीं थी। भ्रष्टाचार अपने चरम पर था। यदि किसी ने मुंह भी खोला तो उसको सीधे जेल में बंद कर दिया जाता था। हर आदमी डरा-डरा सा रहता था। एक तरह से लोगों के मुंह पर ताला लगा हुआ था, लेकिन

आपातकाल के दौर में यद्यपि संघ पर प्रतिबंध लगा दिया गया था, तथापि संघ के स्वयंसेवकों ने भूमिगत रहकर आपातकाल के दौरान इंदिरा गांधी के अत्याचारों के वृतांत से सम्बंधित साहित्य का प्रकाशन व वितरण प्रारम्भ कर दिया। संघ के स्वयंसेवक रेलवे स्टेशनों, चाय की दुकानों व पुस्तकालयों में जाकर वहां चोरी छिपे समाचार पत्र वितरित करते थे। जिसके कारण आमजन के अंदर तक आक्रोश उत्पन्न होने लगा था। अटल बिहारी वाजपेई जैसे कई दिग्गज नेता न्यायालय की शरण में जाने के कारण पेरोल पर छूटकर बाहर आ गए थे। इंदिरा गांधी को लगने लगा कि देश में जागरूकता बढ़ चुकी है और कहीं ऐसा ना हो कि सत्ता पलट जाए, इसलिए उन्होंने आपातकाल हटाकर चुनाव कराने की सोची।

संविधान निर्माण के बाद इंदिरा गांधी द्वारा संविधान की निर्मम हत्या और आमजन के साथ हुए अमानवीय यातनाओं के इस कुकृत्य काल को भारतीय इतिहास के अंतर्गत काले अक्षरों में अंकित किया जाता रहेगा।



फुटबॉल का महाकुम्भ



UNITED STATES



MEXICO



CANADA

2026 फीफा विश्व कप



प्रवीण सिन्हा

फीफा विश्व कप 2026 का आयोजन 11 जून से 19 जुलाई के बीच उत्तरी अमेरिका के तीन देशों अमेरिका, कनाडा और मैक्सिको में किया जा रहा है। इतिहास में पहली बार इस टूर्नामेंट में 48 टीमों हिस्सा ले रही हैं और कुल 104 मैच खेले जा रहे हैं।

वैश्विक संकट के इस दौर में इन अनेक चिंताओं से मुक्त विश्व खेल जगत है, जो फुटबॉल के रोमांच में डूबता जा रहा है। जी हां, बात हो रही है फीफा विश्व कप की। विश्व खेल जगत का इतिहास साक्षी है कि पिछले करीबन 100 वर्षों से यदि किसी खेल ने खेलप्रेमियों की धड़कनों पर राज किया है तो वह फुटबॉल है। मैदान पर एक फुटबॉल के पीछे भागते 22 खिलाड़ी हैं, पर अपनी-अपनी टीमों के समर्थन में मंत्रमुग्ध करोड़ों खेलप्रेमियों का एकजुट हो जाने का अनोखा उदाहरण केवल फीफा विश्व कप में ही देखने को मिलता है। लगभग एक माह तक चलने वाले विश्व कप का खुमार विश्व खेल जगत पर कुछ ऐसा चढ़ता है कि कई देशों में मैचों का लुप्त उठाने के लिए ऑफिस बंद कर दिए जाते हैं, बड़े-बड़े चौराहों पर लगे जायंट स्क्रीन के सामने हजारों लोगों की भीड़ इकट्ठा हो जाती है तो सड़कों

पर जीत का जश्न मनाने वालों को काबू कर पाना प्रशासन के लिए भारी समस्या बन जाती है।

रचा जा रहा है इतिहास

फीफा विश्व कप के पिछले 22 संस्करणों के बाद कई इतिहास रचे जाने के लिए याद किया जाएगा 2026 विश्व कप।

- * पहली बार इस बार फीफा विश्व कप का आयोजन संयुक्त रूप से तीन देशों (अमेरिका, कनाडा और मैक्सिको) में किया जा रहा है।
- * पिछले सात बार से विश्व कप खिताब की होड़ में 32 टीमों हुआ करती थीं, इस बार सर्वाधिक 48 टीमों के बीच होड़ दिखेगी।
- * तीन देशों के 16 स्टेडियमों में इस बार सर्वाधिक 104 विश्व कप के मैच खेले जाएंगे।

- * मौजूदा समय के स्टार फुटबॉलर अर्जेटीना के लियोनेल मेसी और पुर्तगाल के क्रिस्टियानो रोनाल्डो 6-6 विश्व कप खेलने वाले दुनिया के पहले खिलाड़ी बन गए।
- * इस बार विश्व कप का 23वां संस्करण है और ब्राजील हर बार भाग लेने वाला दुनिया का इकलौता देश है।
- * जर्मनी के मिरोस्लाव क्लॉस के नाम विश्व कप में सर्वाधिक 16 गोल करने का रिकॉर्ड है। अर्जेटीना के लियोनेल मेसी (13) और फ्रांस के एमबाप्पे (12) इस रिकॉर्ड को तोड़ने की दहलीज पर हैं।
- * टूर्नामेंट के बड़े स्वरूप के कारण इस साल हिस्सा ले रहे 48 देशों के कुल 1248 खिलाड़ी मैदान पर दिखाई देंगे। विश्व कप के इतिहास में खिलाड़ियों का यह अब तक का सबसे बड़ा समूह है।
- * केप वर्दी, कुराकाओ, जॉर्डन और उज्बेकिस्तान की टीमों पहली बार फीफा विश्व कप में खेल इतिहास रचेंगी।
- * अर्जेटीना, ब्राजील, स्पेन और फ्रांस हैं खिताब के प्रबल दावेदार

अभी चूंकि ग्रुप दौर के ही मुकाबले चल रहे हैं इसलिए खिताब विजेता की भविष्यवाणी करना बेहद कठिन है। फीफा विश्व कप एक ऐसा मंच है जहां कई नई टीमों के सामने बड़ी-बड़ी टीमों उलटफेर का शिकार बन टूर्नामेंट से बाहर हो जाती हैं। हां, वर्तमान फॉर्म व प्रतिभा की दृष्टि से गत विजेता अर्जेटीना को खिताब के मुख्य दावेदारों में गिना जा सकता है, जबकि फ्रांस, स्पेन, पुर्तगाल, इंग्लैंड और जर्मनी जैसी धुरंधर टीमों की भी दावेदारी काफी तगड़ी है। इनमें से इंग्लैंड और जर्मनी की टीमों हमेशा ऊंचा लक्ष्य लेकर चलती हैं और विश्व कप के मुकाबले जैसे-जैसे आगे बढ़ते हैं, वो खिताब से कम कुछ भी स्वीकारने की नहीं सोचते।

इस दौरान जहां तक उलटफेर करने वाली टीमों की बात है तो विश्व कप हमेशा से आश्चर्यचकित करता रहा है। उदाहरण के लिए पिछले 2022 विश्व कप में मोरक्को धुआंधार प्रदर्शन करते हुए सेमीफाइनल में पहुंचने वाला पहला अफ्रीकी देश बना था। इस बार भी मोरक्को पर दृष्टि रहेगी। इसी तरह जापानी टीम बेहद अनुशासित, बेहतर रणनीति और निडरता के साथ विपक्षी टीमों को टक्कर देती है। उरुग्वे की युवा टीम भी कुछ अप्रत्याशित परिणाम निकालने में सक्षम है।

भारत फिर बना दर्शक

इस बार जबकि प्रतिभागी टीमों की संख्या बढ़ा दी गई है और कई छोटी जनसंख्या वाले देश विश्व कप में हिस्सा

ले रहे हैं, उस वैश्विक मंच पर लगभग 150 करोड़ की जनसंख्या वाले भारत का न होना निश्चित तौर पर अखरता है। भारत में खेल संस्कृति निरंतर विकास की राह में अग्रसर है, वहां फुटबॉल के मामले में दयनीय स्थिति देख दुख होता है। 1950 में भारतीय टीम एकमात्र बार फीफा विश्व कप में क्वालीफाई करने में सफल हुई थी, लेकिन भारत ने टूर्नामेंट शुरू होने से पहले ही अपना नाम वापस ले लिया। इसके बाद भारतीय फुटबॉल की स्थिति निरंतर खराब होती गई और आज स्थिति यह है कि हम एशिया महादेश में भी शीर्षस्थ टीमों की कतार में नहीं हैं। इसके लिए भारतीय फुटबॉल के ढांचे में परिवर्तन और बेहतर योजनाओं का क्रियान्वयन अत्यंत आवश्यक है। भारत में क्रिकेट या हॉकी की तुलना में फुटबॉल की लोकप्रियता कतई कम नहीं है, लेकिन हम विश्व कप में भाग लेने वाली एक टीम तैयार नहीं कर पाते हैं। दर्शक के तौर पर भारत फीफा विश्व कप के मैच टीवी पर देखे जाने वाले अग्रणी देशों में अवश्य शामिल है।

भारतीय कस्बे से भी छोटा देश है विश्व कप में

इस बार का विश्व कप कुछ देशों के लिए बेहद ऐतिहासिक होने वाला है। केप वर्दी, कुराकाओ, जॉर्डन और उज्बेकिस्तान की टीमों पहली बार फीफा विश्व कप की मुख्य प्रतियोगिता में खेलकर इतिहास रचेंगी। इन सभी ने टूर्नामेंट में बढ़ाई गई टीमों का लाभ उठाते हुए फुटबॉल के सबसे बड़े मंच पर जगह बनाई और सबसे बड़े आश्चर्य की बात है कि जिस कुराकाओ ने वर्ल्ड कप के लिए क्वालीफाई किया है, उसकी जनसंख्या लगभग 1,56,000 है। कुराकाओ वर्ल्ड कप के लिए क्वालीफाई करने वाला अब तक का सबसे छोटा देश है। भारतीय कस्बों से भी छोटा देश होने के बाद भी वे विश्व फुटबॉल की धुरंधर टीमों के विरुद्ध मैदान पर उतरेंगे। इसी तरह अपने पहले ही ग्रुप मैच में पूर्व विश्व चैम्पियन स्पेनी टीम को 1-1 से ड्रॉ पर रोक इतिहास रचने वाले केप वर्दी की जनसंख्या एनसीआर नोएडा से भी कम लगभग 5 लाख 30 हजार है।

इसी क्रम में विश्व कप में क्वालीफाई करने वाले देशों में कांगो और हैती भी शामिल हैं, जो 52 साल बाद इसमें वापसी कर रहे हैं। दोनों ने आखिरी बार 1974 के विश्व कप में हिस्सा लिया था। इस तरह के रोचक तथ्य दिखाते हैं कि कैसे बड़ा किया गया विश्व कप उन देशों को सबसे बड़े मंच पर वापसी का अवसर देता है, जो लम्बे समय से इससे दूर थे।





टी 20 विश्व कप महिला क्रिकेट उत्सव

खेल

विश्व स्तरीय क्रिकेट प्रतियोगिता (10वीं टी 20 महिला विश्व कप क्रिकेट) का आयोजन इंग्लैंड में 11 जून से 6 जुलाई तक चलेगा। उल्लेखनीय है कि इस फॉर्मेट की प्रतियोगिता का पहला आयोजन इंग्लैंड में ही वर्ष 2009 में हुआ था। इंग्लैंड ने न केवल अपनी धरती पर इसकी मेजबानी की थी बल्कि पहली विजेता भी बनी थी। वर्तमान कोच शार्लोट एडवर्ड्स ने उस विश्व विजेता टीम की कप्तानी की थी। इस बार विजेता होने का निर्णायक युद्ध और भी रोचक होनेवाला है। मेजबान इंग्लैंड इसे दूसरी बार जीतने का हरसम्भव प्रयास करेगा तो न्यूजीलैंड अपना विजेता का ताज बचाने में कोई कसर छोड़ना नहीं चाहेगी। वर्तमान एक दिवसीय महिला क्रिकेट की विश्व विजेता भारत टी-20 फॉर्मेट की प्रतियोगिता को पहली बार जीतने का भरपूर प्रयास करेगा। ऑस्ट्रेलिया जैसी सबसे मजबूत टीम इसे सातवीं बार जीतकर अपना दबदबा फिर से बनाए रखना चाहेगी। वस्तुतः ऑस्ट्रेलिया ने विजेता का खिताब 6 बार (2010, 2012, 2014, 2018, 2020 और 2023) जीता है। दूसरी ओर इंग्लैंड (2009), वेस्ट इंडीज (2016) और न्यूजीलैंड (2024) जैसी टीमों में एक बार ही विजेता बन पाई हैं। पिछले विश्व कप के बाद के प्रदर्शन पर दावेदार टीमों के प्रदर्शनों पर एक दृष्टि डाली जाए तो ऑस्ट्रेलिया ने 12 इंटरनेशनल टी-20 मैच खेले हैं, जिसमें 10 में उसे जीत मिली है। भारत ने 24 इंटरनेशनल टी-20 मैच खेले हैं जिसमें 14 में उसे जीत मिली है। इंग्लैंड को 20 इंटरनेशनल मुकाबलों में 12 में उसे जीत मिली है। इसी प्रकार अन्य 2 टीमों में दक्षिण अफ्रीका ने 21 में 10 मैच जीते हैं तो न्यूजीलैंड ने 17 में 9 मैचों में जीत प्राप्त की है। उपरोक्त सभी टीमों के प्रदर्शन उन्हें विश्व कप के दावेदारों में शामिल करते हैं। इस बार सबसे ज्यादा 12 टीमों हिस्सा ले रही हैं। टीमों को 6-6 के दो समूहों में बांटा गया है। आईसीसी रैंकिंग के आधार पर भारत, ऑस्ट्रेलिया, श्रीलंका, न्यूजीलैंड, पाकिस्तान, दक्षिण अफ्रीका और वेस्ट इंडीज आदि विश्व की सर्वश्रेष्ठ 7 टीमों ने सीधे



राजीव रोहित

भारत को ग्रुप के अपने 5 मैच पाकिस्तान (14 जून), नीदरलैंड (17 जून), दक्षिण अफ्रीका (21 जून), बांग्लादेश (25 जून) और आस्ट्रेलिया (28 जून) के साथ खेलना है।

प्रतियोगिता में खेलने के लिए पात्र चुनी गई हैं। अन्य पांच टीमों की प्रक्रिया में नेपाल में आईसीसी द्वारा आयोजित हुए क्वालिफायर प्रतियोगिता के आधार पर बांग्लादेश, नीदरलैंड्स, आयरलैंड और स्कॉटलैंड ने अपनी जगह बनाई है। नीदरलैंड की टीम पहली बार प्रतियोगिता में खेल रही है। 7 अलग-अलग स्थानों ओल्ड ट्रैफर्ड (मैनचेस्टर), एजबेस्टन (बर्मिंघम), हेंडिले (लीड्स), रोज बाउल (साउथम्पटन), ब्रिस्टल काउंटी ग्राउंड और लंदन के ऐतिहासिक 'लाड्स' आदि मैदानों पर फाइनल सहित 33 मैच खेले जाएंगे। दोनों समूह में राउंड रॉबिन फॉर्मेट लागू होगा। इस फॉर्मेट के अंतर्गत हर टीम दो-दो मैच खेलेगी। अंत में दोनों समूह की दो श्रेष्ठ टीमों सीधे सेमी-फाइनल में अपनी जगह सुनिश्चित करेगी। दोनों सेमी फाइनल मैच लंदन के 'ओवल' मैदान में और खिताबी मुकाबला 'लाड्स' में खेला जाएगा। आईसीसी द्वारा इस प्रतियोगिता के लिए 8.76



मिलियन डॉलर (लगभग 73 करोड़) की पुरस्कार राशि घोषित की गई है। विजेता टीम को 2.34 मिलियन डॉलर (19.5 करोड़ रूपए) की राशि दी जाएगी। इतना ही नहीं बल्कि हर मैच में विजयी टीम को लगभग 26 लाख रूपए दिए जाएंगे।

नियमों की बात की जाए तो ग्रुप मैचों के लिए कोई रिजर्व डे नहीं रखा गया है। 1 और 3 जुलाई को खेले जानेवाले सेमी फाइनलों और 6 जुलाई को खेले जानेवाले फाइनल के लिए रिजर्व डे अवश्य रखा गया है। सेमी फाइनल के एवज में रिजर्व डे पर अतिरिक्त समय 120 मिनट और फाइनल के एवज में रिजर्व डे पर 150 मिनट उपलब्ध रहेगा। यदि बारिश के कारण सेमी फाइनल पूरा नहीं हो पाता या सुपर ओवर भी नहीं खेला जा सकता तो अपने ग्रुप में टॉप पर रहनेवाली टीम सीधे फाइनल में पहुंच जाएगी। यदि फाइनल मैच या फाइनल का सुपर ओवर खराब मौसम के कारण रद्द हो जाता है तो दोनों फाइनलिस्ट टीमों को संयुक्त विजेता घोषित कर दिया जाएगा।

यह सर्वविदित है कि प्रतियोगिता जैसे-जैसे आगे बढ़ती

जाएगी वैसे ही इस वैश्विक प्रतियोगिता में दावेदार के रूप में प्रवेश करने वाली सभी टीमों धीरे-धीरे दावेदारों से चुनौती देने वाली टीम में परिवर्तित होती जाएंगी। हर देश के क्रिकेट प्रशंसकों को उनकी अपनी टीमों एक प्रतिभाशाली और विजेता टीम के रूप में दिखाई देती हैं। भारतीय महिला क्रिकेट टीम के भी देश-विदेश में फैले प्रशंसकों को भी अपनी टीम से काफी आशाएं हैं। पिछले साल वनडे विश्व कप जीतने के बाद भारत ने विदेशों में अपना कुछ सबसे प्रभावशाली क्रिकेट प्रदर्शन किया और साथ ही महिला क्रिकेट लीग (डब्ल्यूपीएल) के माध्यम से अपनी टीम को और मजबूत बनाया। भारतीय स्टा खिलाड़ियों विशेष रूप से हरमनप्रीत कौर और स्मृति मंधाना के लाजवाब प्रदर्शनों ने टीम की सफलता में एक व्यापक बदलाव को दर्शाया है। यह अब ऐसी टीम नहीं है जो आत्मविश्वास की खोज में है बल्कि ऐसी टीम है जो इसके बोझ को सम्भालना सीख चुकी है। घरेलू मैदान पर वनडे खिताब की सर्वश्रेष्ठ जीत के बाद खिलाड़ियों ने इसे एक आदत बनाने की बात कही तो हैं, लेकिन सभी जानते हैं कि इस टूर्नामेंट में उनकी यात्रा आसान नहीं रहनेवाली है। हाल ही में दक्षिण अफ्रीका और इंग्लैंड से लगातार मिली सीरीज की हार ने उनकी कमजोरियों को उजागर कर दिया है, ऐसे समय में जब अधिकांश दावेदार स्थिरता को प्राथमिकता देंगे। टीम संयोजन अभी भी अनिश्चित हैं और कई वरिष्ठ खिलाड़ी अभी भी अपनी सर्वश्रेष्ठ फॉर्म की खोज में हैं। परिणामस्वरूप भारत कई प्रश्नों के घेरे के साथ मैदान में उतरेगा। इस तथ्य से भी नकारा नहीं जा सकता कि भारत अधिकतर वैश्विक प्रतियोगिताओं में सह-प्रतिस्पर्धी के रूप में आता रहा है। धीरे-धीरे वे सह-प्रतिस्पर्धी को चुनौती देने वाली टीम के रूप में उभरती हैं। इस साल महिला टी 20 विश्व कप में टीम से कुछ अलग अपेक्षाएं हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि उतार-चढ़ाव भरे प्रदर्शनों के बाद भी भारतीय टीम को हमेशा एक प्रतिभाशाली टीम के रूप में देखा जाता रहा है जो कई बार खिताब के प्रबल दावेदारों को हराने में सक्षम प्रमाणित हुई हैं। आज उन्हें खिताब जीतने में सक्षम टीम के रूप में देखा जा रहा है। भारतीय टीम में सभी प्रतिभाशाली खिलाड़ियों का चयन किया गया है जिनमें हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना (उप-कप्तान), शेफाली वर्मा, जेमिमा रोड्रिग्स, दीप्ति शर्मा, ऋचा घोष (विकेटकीपर), अरुंधति रेड्डी, रेणुका ठाकुर, क्रांति गौड़, श्री चरणी, श्रेयांका पाटिल, भारती फुलमाली, यास्तिका भाटिया, नंदिनी शर्मा, राधा यादव आदि शामिल की गई हैं।

●●●



भारतीय निशानेबाजी को विश्व मंच पर नई पहचान दिलाने वाले जसपाल राणा का नाम देश के महानतम खिलाड़ियों और प्रशिक्षकों में लिया जाता है। उनके सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन और बाद में कोच के रूप में दिए गए योगदान ने भारतीय शूटिंग की दिशा बदल दी।

अर्जुन से द्रोणाचार्य तक की यात्रा

भारतीय खेल जगत के इतिहास में कुछ ऐसे नाम हैं जिन्होंने न केवल स्वयं पदक जीते बल्कि देश के खेल जगत को एक नई दिशा दी। ये महान नायक थे दिग्गज निशानेबाज और कोच जसपाल राणा। जून 2026 में 49 वर्ष की अल्पायु में उनका आकस्मिक निधन पूरे देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है। बतौर खिलाड़ी और मार्गदर्शक उन्होंने भारतीय निशानेबाजी को वैश्विक मंच पर एक पहचान दिलाई।

28 जून 1976 को उत्तराखंड के उत्तरकाशी में जन्मे जसपाल राणा को निशानेबाजी का कौशल विरासत में मिला था। उनके पिता नारायण सिंह राणा ने ही उन्हें इस खेल के शुरुआती गुरु सिखाए थे। जसपाल ने बेहद अल्प आयु में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा लिया था। केवल 12 साल की आयु में उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर अपना पहला पदक जीता।

अंतरराष्ट्रीय मंच पर उल्लेखनीय सफलता वर्ष 1994 में मिली, जब मिलान में आयोजित 'विश्व निशानेबाजी चैंपियनशिप' (जूनियर वर्ग) में उन्होंने न केवल स्वर्ण पदक जीता बल्कि एक नया विश्व रिकॉर्ड भी बनाया। इसी साल केवल 18 वर्ष की आयु में हिरोशिमा एशियाई खेलों में 25 मीटर सेंटर फायर पिस्टल इवेंट में स्वर्ण पदक जीतकर उन्होंने भारतीय खेल जगत में एक नई पहचान बनाई। यह एशियाई खेलों की निशानेबाजी स्पर्धा में 16 वर्षों बाद भारत का पहला स्वर्ण पदक था।

राष्ट्रमंडल खेलों के नायक

जसपाल राणा का नाम आते ही राष्ट्रमंडल खेलों में उनके सर्वश्रेष्ठ रिकॉर्ड का स्मरण हो आता है। वे राष्ट्रमंडल खेलों के इतिहास में भारत के सबसे सफल एथलीटों में से एक रहे हैं। उन्होंने 1994 से 2006 के बीच चार संस्करणों में कुल 15 पदक जीते, जिनमें 9 स्वर्ण, 4 रजत और 2 कांस्य पदक शामिल हैं। 25 मीटर सेंटर फायर पिस्टल और स्टैंडर्ड पिस्टल स्पर्धाओं में उनकी बराबरी करने वाला कोई नहीं था।



अपर्णा झा

वर्ष 2006 के दोहा एशियाई खेल उनके करियर का सबसे यादगार उपलब्धियों में से एक माना जाता है। तेज बुखार से पीड़ित होने के बाद भी उन्होंने अद्वितीय मानसिक दृढ़ता का परिचय दिया और तीन स्वर्ण व एक रजत पदक जीते। इसी दौरान उन्होंने 25 मीटर सेंटर फायर पिस्टल में 590 अंकों के शानदार स्कोर के साथ विश्व रिकॉर्ड की बराबरी की।

राष्ट्रीय सम्मान और गुरु की भूमिका

खेलों में उनके इस अभूतपूर्व योगदान के लिए भारत सरकार ने उन्हें कई प्रतिष्ठित सम्मानों से सम्मानित किया गया।

अर्जुन पुरस्कार (1994): यह सम्मान उन्हें महज 18 वर्ष की आयु में प्राप्त हुआ।

पद्म श्री (1997): उन्हें देश के चौथे सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित किया गया।

द्रोणाचार्य पुरस्कार (2020): एक उत्कृष्ट कोच के रूप में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया।

सक्रिय खेल जीवन से संन्यास के बाद राणा ने भारत के युवा निशानेबाजों को तराशने में अपना उत्कृष्ट योगदान दिया। साल 2012 में वे राष्ट्रीय जूनियर कोच बने और भारत की 'नर्सरी' तैयार की। उनकी सबसे बड़ी कोचिंग सफलता मनु भाकर के रूप में सामने आई। 2024 के पेरिस ओलम्पिक में मनु भाकर द्वारा जीते गए 2 ऐतिहासिक कांस्य पदकों के पीछे जसपाल राणा की कठोर और अनुशासित ट्रेनिंग का बहुत बड़ा हाथ था। उन्होंने सौरभ चौधरी और अनीश भानवाला जैसे कई वैश्विक स्तर

के निशानेबाज देश को दिए। जसपाल राणा आज भले ही हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन अर्जुन से लेकर द्रोणाचार्य तक उनकी यह यात्रा आने वाली कई पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। उन्होंने सिखाया कि खेल के माध्यम से देश सेवा कैसे की जाती है। भारतीय खेलों में उनका योगदान हमेशा स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा।

●●●

झारखंड के पारम्परिक उत्पादों को जीआई टैग मिलने से राज्य की कला, शिल्प और कारीगरी को नई पहचान मिली है। इससे स्थानीय कारीगरों, बुनकरों और शिल्पियों को आर्थिक लाभ मिलने के साथ-साथ इन उत्पादों की विशिष्टता और गुणवत्ता को भी संरक्षण प्राप्त होगा।

- * जीआई टैग प्राप्त उत्पाद:
- * भगैया साड़ी एवं फैब्रिक
- * कुचाई सिल्क साड़ी
- * केसरिया कलाकंद (कोडरमा)
- * डोकरा शिल्प (डोकरा क्राफ्ट)
- * दुमका चादर
- * बड़ोनी कठपुतली (बड़ोनी पपेट्स)
- * मुंडा आभूषण (मुंडा ज्वेलरी)
- * झारखंड बांस शिल्प (बैंबू क्राफ्ट)
- * तसर सिल्क एवं साड़ियां
- * जादोपटिया पेंटिंग
- * पांची साड़ी एवं फैब्रिक



जीआई (भौगोलिक संकेतक) टैग क्या है?

जीआई टैग एक विशेष चिह्न है, जो किसी उत्पाद की विशिष्ट भौगोलिक उत्पत्ति को प्रमाणित करता है। यह दर्शाता है कि उस उत्पाद की विशेष गुणवत्ता, प्रतिष्ठा या अन्य विशिष्ट गुण उसके भौगोलिक क्षेत्र से जुड़े हुए हैं। यह उत्पादकों को कानूनी संरक्षण देता है तथा किसी अन्य व्यक्ति या संस्था द्वारा उस उत्पाद के नाम के दुरुपयोग को रोकता है।



नन्हे ऑक्टोपस की नई प्रजाति की खोज

गैलापागोस द्वीप समूह के तट से दूर गहरे समुद्र में रहने वाला ऑक्टोपस इतना छोटा है कि वह हथेली में समा सकता है। शिकागो के फील्ड म्यूजियम के नेतृत्व में शोधकर्ताओं की एक टीम ने हाल ही में जूटैक्सा पत्रिका में प्रकाशित एक नए अध्ययन में घोषणा की है कि अब इसका आधिकारिक नाम माइक्रोएलेडोन गैलापागोंसिस है।

मेसालिना बिश्रोई: छिपकली की नई प्रजाति मिली



भारतीय प्राणी सर्वेक्षण और स्वतंत्र वन्यजीव शोधकर्ताओं ने हाल ही में राजस्थान के बीकानेर जिले (गजनेर) में 'मेसालिना बिश्रोई' नामक छिपकली की एक नई प्रजाति की खोज की है। यह खोज मरुस्थलीय जैव विविधता के अनदेखे पहलुओं को भी सामने लाती है। मेसालिना बिश्रोई की खोज भारत के राजस्थान राज्य के बीकानेर जिले में गजनेर के पास थार मरुस्थल क्षेत्र में की गई। यह प्रजाति कठोर मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र में पाई जाती है। इस प्रजाति का नाम बिश्रोई रखा गया है, जो राजस्थान के बिश्रोई समुदाय के सम्मान में है, जो वन्यजीव संरक्षण और पर्यावरण सुरक्षा की मजबूत परम्परा के लिए जाना जाता है।

महाराणा प्रताप ने धर्म, संस्कृति, स्वाभिमान और राष्ट्रहित के लिए जीवनभर संघर्ष किया - डॉ. मोहन भागवत जी

समाचार



उदयपुर। हल्दीघाटी विजय के 450 वर्ष पूर्ण होने और वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की 486वीं जयंती के अवसर पर गांधी ग्राउंड में प्रताप गौरव केंद्र 'राष्ट्रीय तीर्थ' के तत्वाधान में आयोजित 'राष्ट्र चेतना संकल्प सभा' में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी ने कहा कि भारत का इतिहास पराधीनता का नहीं बल्कि विदेशी आक्रांताओं के विरुद्ध निरंतर चले संघर्ष, प्रतिरोध और आत्मगौरव का इतिहास है। हल्दीघाटी का युद्ध केवल दो सेनाओं का युद्ध नहीं था बल्कि राष्ट्रचेतना और स्वाभिमान की रक्षा के लिए सम्पूर्ण समाज द्वारा लड़ा गया महासंग्राम था।

हल्दीघाटी विजय सार्द्ध चतुःशती समारोह में उन्होंने कहा कि युद्ध के उपलब्ध ऐतिहासिक विवरणों, समकालीन स्रोतों और स्वयं मुगल इतिहासकारों के वर्णनों से स्पष्ट होता है कि युद्ध के विभिन्न चरणों में मुगल सेना को पीछे हटना पड़ा। यदि युद्ध के बाद भी शत्रु भय और असुरक्षा की स्थिति में रहा तो वास्तविक विजय किसकी थी, इसका निर्णय इतिहास स्वयं करता है।

समारोह में विशिष्ट अतिथि निम्बार्काचार्य श्रीजी श्याम शरण देवाचार्य जी ने कहा कि यह आयोजन केवल एक ऐतिहासिक स्मरण नहीं बल्कि राष्ट्रभक्ति, स्वाभिमान और सनातन संस्कृति के पुनर्जागरण का महापर्व है। वर्षों से इतिहास के सम्बंध में फैलाई गई भ्रांतियों का निराकरण अब समाज के सामने हो रहा है और महाराणा प्रताप के वास्तविक गौरव को पुनः स्थापित किया जा रहा है। मेवाड़ की भूमि शौर्य और भक्ति दोनों की पावन धरा है। एक ओर इस भूमि ने वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप जैसे राष्ट्रनायक को जन्म दिया, वहीं दूसरी ओर भक्तिमई मीराबाई जैसी महान कृष्णभक्त को भी दुनिया को दिया। जब मातृभूमि और सनातन संस्कृति पर संकट आया, तब महाराणा प्रताप ने भगवान श्रीराम के 'जननी

जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' के आदर्श को आत्मसात करते हुए अपना सर्वस्व राष्ट्र और धर्म की रक्षा के लिए समर्पित कर दिया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप समिति के अध्यक्ष डॉ. भगवती प्रकाश शर्मा ने कहा कि अब समय आ गया है कि हल्दीघाटी युद्ध के वास्तविक इतिहास को जन-जन तक पहुंचाया जाए और उन भ्रांतियों का निराकरण किया जाए जो वर्षों से समाज में प्रचारित की जाती रही हैं। इस वर्ष महाराणा प्रताप जयंती और हल्दीघाटी युद्ध के 450 वर्ष पूर्ण होने का दुर्लभ संयोग बना है, जिससे इस आयोजन का महत्व और बढ़ गया है। उपलब्ध ऐतिहासिक प्रमाण स्पष्ट करते हैं कि हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा प्रताप ने मुगल सेना को परास्त कर स्वाधीनता, स्वाभिमान और राष्ट्रधर्म की रक्षा का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया था। उन्होंने आयोजन को सफल बनाने में प्रशासन, मीडिया, सामाजिक संगठनों एवं हजारों कार्यकर्ताओं के योगदान की सराहना करते हुए इसे राष्ट्रचेतना के नवजागरण का ऐतिहासिक अभियान बताया।

प्रताप गौरव केंद्र के निदेशक अनुराग सक्सेना ने सभी का स्वागत करते हुए वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप समिति व समिति के अंतर्गत संचालित प्रताप गौरव केंद्र का परिचय दिया। प्रताप गौरव केंद्र में श्रव्य दृश्य प्रदर्शनी से महाराणा प्रताप के हल्दीघाटी युद्ध में हार होने के विमर्श को तोड़ा गया है और महाराणा प्रताप के हल्दीघाटी युद्ध में विजय होने के विमर्श को स्थापित किया गया है। हल्दीघाटी विजय सार्द्ध चतुः शती समारोह के अंतर्गत वर्ष भर हुए आयोजनों की जानकारी भी दी गई। राष्ट्र चेतना संकल्प सभा में मेवाड़-वागड़ के कई संत-महंतों का सात्रिध्य प्राप्त हुआ। मेवाड़ राजपरिवार के महाराज विश्वराज सिंह मेवाड़ भी उपस्थित रहे।

●●●

पुणे श्रमिक पत्रकार संघ



समाज में सकारात्मक बदलाव के वाहक जेन जी - सुनील आंबेकर

पुणे। संघ शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में नवी पेठ स्थित पुणे श्रमिक पत्रकार संघ की ओर से आयोजित विशेष वार्तालाप कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने कहा कि देश की नई पीढ़ी यानी 'जेन जी' को लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) बेहद आशान्वित है। आज के युवा अपनी परम्पराओं और भारत के गौरवशाली इतिहास से जुड़े हुए हैं। समाज में सकारात्मक और रचनात्मक बदलाव लाने में यह पीढ़ी बहुत बड़ा योगदान दे रही है। इस अवसर पर मंच

पर पत्रकार संघ के अध्यक्ष ब्रिजमोहन पाटिल और महासचिव मंगेश फळे भी उपस्थित रहे। सुनील आंबेकर ने संघ के पंजीकरण (रजिस्ट्रेशन), 'जेन जी' जनसंख्या असंतुलन और मुस्लिम समाज को लेकर संघ के दृष्टिकोण को साझा किया। 'कॉकरोच जनता पार्टी' के आंदोलन से जुड़े प्रश्न पर कहा कि भारत में सभी स्तरों पर लोकतांत्रिक तरीके से चुनाव होते हैं। हमारी न्यायालय, प्रशासन और मीडिया पूरी स्वतंत्रता के साथ अपना काम कर रहे हैं। ऐसे मजबूत लोकतंत्र में यदि कोई अपनी आवाज उठा रहा है तो व्यवस्था में उसकी बात को सुनने और उचित संज्ञान लेने की क्षमता होनी चाहिए। इसलिए इस तरह के आंदोलनों से अचम्भित या हैरान होने की कोई आवश्यकता नहीं है।



कौशिक आश्रमतर्फे आयोजित कार्यक्रमात
भय्याजी जोशी, प्रा. नानासाहेब जाधव यांच्या हस्ते
भारतमाता पूजन करण्यात आले.



अ खिल
भारतीय
रामराज्य निर्माण
सेना संस्थापक
अध्यक्ष

डॉ.भीमाशंकर यादव आमरण अनशन पर हैं। वे ब्रह्मगाव गोवराई के जागृति देवस्थान मारुति राया को अपवित्र करने और गायों की हत्या करने वाले अपराधियों के खिलाफ मकोका के अंतर्गत कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। विश्व हिंदू परिषद बीड ने उनके धार्मिक कार्यों के प्रति अपना समर्थन दिया। इस अवसर पर विश्व हिंदू परिषद देवगिरी प्रांत सदस्य डॉ.मुरली जेसवाणी, जिला सहमंत्री गणेश गुरुखुदे, शहराध्यक्ष डॉ.भास्कर राऊत, आनंद बारशीकर, किशनसिंह चौव्हाण, विनायक कुलकर्णी, हिंदू जागरण मंच के एड. सुहास सुलाखे, एड. विठ्ठल शेळके, एड. सुदर्शन बुंदेले, सुरेश सोनटके आदि उपस्थित थे।

शैक्षणिक सामग्री का किया जाएगा वितरण

जालना एज्यूकेशन फाउंडेशन की ओर से रविवार को एकल अभिभावक के बच्चों के बीच शैक्षणिक सामानों का वितरण किया जाएगा। उक्त कार्यक्रम 21 जून 2026 की सुबह 11 बजे महाराजा अग्रसेन फाउंडेशन, कॉलेज रोड जालना में आयोजित होगा। कार्यक्रम के अध्यक्ष उद्योगपति घनश्यामदासजी गोयल हैं। प्रमुख वक्ता हेरंबजी कुलकर्णी तथा मुख्य अतिथि के रूप में सहायक आयुक्त, महिला व बालविकास विभाग, महाराष्ट्र, योगेशजी जव-दे, मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद, जालना डॉ. कृष्णाकांतजी कनवारीया, आयुक्त महानगरपालिका, जालना अंजली शर्मा कार्यक्रम में उपस्थित रहेंगी।

